Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A Semester - III
Phil. CC - 11
Western Analytical Philosophy

1 L. Wittgenstein:
"Picture theory of meaning"

Q. विट्गेंस्टाइन के चित्र सिद्धान्त की व्याख्या करें ?

Ans: विट्गेंस्टाइन बहुत प्रतिभाशाली दार्शनिक चिन्तक था। उनकी दृष्टि में दर्शन का मुख्य कार्य दार्शनिक विधि से चिन्तन करना है इसलिए उसने दार्शनिक प्रविधि पर अधिक बल दिया है। उनके अनुसार दार्शनिक प्रविधि का महत्व दार्शनिक प्रणाली से अधिक है। विट्गेंस्टाइन के अनुसार सम्पूर्ण दर्शन भाषा की विवेचना है। भाषा प्रतिज्ञप्तियों का संकलन है। प्रतिज्ञप्ति भाव व्यक्त करता है प्रतिज्ञप्ति के दो ही रूप हो सकते हैं सत्य या असत्य। प्रतिज्ञप्ति 'खड़िया सफेद है' तभी सत्य कहा जायगा जब खड़िया के सफेद होने का हमको अनुभव हो।

इसका तात्पर्य यह है कि सभी प्रतिज्ञप्तियों का विश्लेषण करके उनको सरल प्रतिज्ञप्तियों में परिणित किया जा सकता है। ये सरल प्रतिज्ञप्तियाँ किसी आणुविक तथ्य का चित्र उपस्थित करती हैं। ये तथ्य हमारे अनुभव जगत के ही होते हैं। इसलिए प्रतिज्ञप्ति अन्ततोगत्वा अनुभूत तथ्यों का चित्रण करते हैं। जो प्रतिज्ञप्तियाँ अनुभूत तथ्यों का चित्रण नहीं करती, वे प्रतिज्ञप्तियाँ ही नहीं हैं उन्हें मिथ्या प्रतिज्ञप्ति कहा जा

सकता है। इसका यह आशय नहीं है कि सभी प्रतिज्ञप्तियाँ व्यापी जगत में अनुभव आनेवाले तथ्यों को अनिवार्यिक रूप से व्यक्त करती हैं। यदि ऐसा हो, तब तो कोई असत्य प्रतिज्ञप्ति हो न होगी। प्रतिज्ञप्ति सत्य और असत्य दो प्रकार की हो सकती है। असत्य प्रतिज्ञप्ति भी सम्भावित तथ्यों की अभिव्यक्ति होती है। ऐसे सम्भावित तथ्य भी अनुभव जगत के हो सकते हैं। जिन शब्दों या प्रतिज्ञप्तियों का इन्द्रिय-परीक्षण नहीं हो सकता है वे निरर्थक हैं। सत्य प्रतिज्ञप्तियाँ तथ्यों के अनुरूप होती हैं और असत्य प्रतिज्ञप्ति तथ्य के विपरीत होती हैं। तथ्य दोनों स्थितियों में अनुभव योग्य होता है। अर्थात् प्रतिज्ञप्ति का आशय इसके प्रमाणीकरण की विधि है। प्रतिज्ञप्तियों की सार्थकता के लिए यह आवश्यक है कि वे अनुभव जगत के तथ्यों से प्रमाणित किये जा सकें। यदि इन्हें प्रमाणित करना सम्भव न हुआ तो इन्हें प्रतिज्ञप्ति ही न समझना चाहिए।

ट्रैक्टेटस में विट्गेंस्टाइन ने अपने "चित्र-सिद्धान्त (Picture theory) का उल्लेख किया है। एकबार पेरिस के न्यायालय में एक मोटरकार की दुर्घटना का खिलौना बनाकर चित्रित की गई थी। इसी उदाहरण से विट्गेंस्टाइन ने चित्र-सिद्धान्त निर्मित कर लिया। उसने सोचा कि प्रतिज्ञप्ति

संसार में प्रयोगात्मक रूप में रख दी जाती है। चित्र में तत्व इस प्रकार संगठित होते हैं जैसे वस्तुओं में उनके होने की सम्भावना होती है, यद्यपि चित्र में खिलौना और गुड़िया नहीं होती किन्तु उसके तत्व उसी प्रकार काम में आते हैं जैसे खिलौने और गुड़िया ही हों। विट्गेंस्टाइन को इस सिद्धान्त की प्रेरणा हर्ष से भी मिली थी। उसका विचार था कि हमारे विचारों और प्रकृति में कुछ समरूपता अवश्य होनी चाहिए। प्रतिज्ञप्तीय चिह्न एक प्रकार के चित्र हैं, किन्तु केवल प्रतिज्ञप्तीय चिह्नों को एक ही चित्र नहीं समझना चाहिए। यदि चित्र आते हैं तो प्रतीज्ञप्तीय चिह्न स्पेसीज हैं। ग्रामोफोन के रेकार्ड और संगीत की लय भी चित्र हैं। इन्द्रियों के परिधि से बाहर की चीजें भी चित्र हो सकती हैं जैसे विचार भी चित्र हैं। चित्र किसी तथ्य का चित्रण करते हैं। चित्र स्वयं भी एक तथ्य है। विचार मानस तत्वों से निर्मित मानसिक चित्र हैं। वह स्पष्टतः प्रतिज्ञप्तीय चिह्न से भिन्न दिखाई देता है। विचार - चित्र संश्लिष्ट होते हैं उनके संघटन क्या है — यह तो विट्गेंस्टाइन नहीं बता सका किन्तु उसने यह अवश्य बताया कि विचार के संघटक शब्दों

के अनुरूप होते हैं। संघटकों का स्वरूप निर्धारण करना मनोविज्ञान का कार्य है।

चित्र भी वैसे ही तथ्य हैं जैसे तथ्यों को वे चित्रित करते हैं क्योंकि चित्रों में कुछ तत्व विशेष प्रकार से संगठित होते हैं। जिस विशेष प्रकार से इसके तत्व संगठित होते हैं उसे चित्र की संरचना (Picture structure) कहते हैं और इसकी संरचना की सम्भावना इसका आकार है। चित्रित तथ्यों के आकार को विटगेंस्टाइन 'चित्रकार' (Pictorial form) कहता है। चित्र और तथ्य में समरूपता होती है, तभी तो चित्र किसी तथ्य का चित्रण कर पाता है। स्थानिक चित्र किसी स्थान का चित्रण करता है, रंगीन चित्र रंगीन तथ्य का चित्रण करता है आदि, आदि।

एक चित्र अपना चित्रकार चित्रित नहीं कर सकता है। वह केवल उसे प्रदर्शित कर सकता है। वह केवल उसे प्रदर्शित कर सकता है। चित्रकार तभी निर्मित होता है जब भाग वस्तुतः वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं तात्पर्य यह है कि विटगेंस्टाइन के अनुसार चित्र और तथ्य के बीच कुछ न कुछ समरूपता होती है वही चित्रकार है। चित्र को अर्थ प्रदान करने के लिए चित्र में दो तत्व हैं उसे प्रतीक में उसी प्रकार दिखाया जाना चाहिए। जिस प्रकार

यथार्थता में वस्तु दिखाई जाती है। इसी कारण चित्र में संवादक तत्व उसी आकार के होने चाहिए जिस आकार के चित्रित तथ्य के तत्व होते हैं। अतः इसमें संरचना की वही सम्भावना होनी चाहिए।

विट गेंस्टाइन ने चित्रकार की तुलना प्रतिनिधि आकार और तर्कीय आकार से की है। चित्रकार और प्रतिनिधि आकार में स्पष्ट भेद है। चित्र अपनी वस्तु का प्रतिनिधित्व इसके बाहरी और से करता है और इसका प्रतिनिधि आकार ही उसका दृष्टिकोण होता है। किसी चित्रण में कोई न कोई दृष्टिकोण अपनाया जाता है। एक स्थिति के भिन्न दृष्टिकोणों से भिन्न चित्र हो सकते हैं। दृष्टिकोण स्वच्छन्द होता है। किन्तु चित्रकार स्वच्छन्द नहीं होता है। यही चित्रकार और प्रतिनिधि आकार में अन्तर है। प्रतिनिधि आकार के कारण कोई चित्र सत्य या असत्य होता है चित्र को सत्य या असत्य कहने के लिये कोई दृष्टिकोण चुनना पड़ता है और चित्र के तत्वों का सम्बन्ध वस्तु के तत्वों से जोड़ना पड़ता है।

अतः यह भी कहा जा सकता है कि चित्र के चित्रकार का सम्बन्ध अर्थ से और प्रतिनिधि आकार

का सम्बन्ध सत्य और मिथ्या से होना है।

तर्कीय आकार को विटगेंस्टाइन सत् का आकार कहता है। इसमें और चित्रकार में कोई भी अन्तर नहीं है। तथ्य और इसके चित्र में कुछ अवयविक होना चाहिए। इसी को तर्कीय आकार कहते हैं। संरचना में अन्तर दिखाने के लिए भी विटगेंस्टाइन जो तर्कीय आकार कहता है। चित्र में तथ्य जैसा का तैसा नहीं मिलता, वरन इसका आकार मिलता है। चित्रकार और तर्कविकार एक ही होने के कारण चित्रों को तर्कीय चित्र कह सकते हैं। तर्कीय चित्र संसार का चित्रणकर सकते हैं। तत्व के आकार के जैसा प्रतिनिधि का आकार क्यों अपेक्षित नहीं है। तर्कीय चित्र ही पर्याप्त है।

इसप्रकार विटगेंस्टाइन का यही चित्र सिद्धान्त है।